ORIGINAL RESEARCH PAPER

Ayurveda

संस्कृत वेदों में आयुर्वेद

KEY WORDS:

डॉ. अनघा ह. घोडके सहाय्यक प्राध्यापक, शा. आयुर्वेद महाविद्यालय धाराशिव.

ABSTRACT

संस्कृत इसका मतलब संस्कारित भाषा ,इस भाषा को देवभाषा कहॉ गया है| संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषा है| संस्कृत सिर्फ एक भाषा नही, अपितु भारतीय संस्कृति का प्राणवायु है| जिस प्रकार देवता अमर है उसी प्रकार संस्कृत भाषा भी अपने विशाल साहित्य , लोकहित की भावना, विभिन्न प्रयासों तथा उपसर्गों के द्वारा नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता आदि के द्वारा अमर है|

पाणिनिने संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा है |कुछ विद्वान प्राचीन वैदिक भाषा को पाणिनीय संस्कृत (लौकिक भाषा) से भिन्न मानते है, परंतु यह भ्रमपूर्ण है| वैदिक भाषा अभ्रान्त रूप से संस्कृत भाषा का आद्य उपलब्ध रूप है|

"संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभि|"

वाक्य में जिसे देवभाषा या "संस्कृत" भाषा कहा है, वह संभवत: यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि के समय तक वैदिक भाषा एवं लोकभाषा के दो नामों, स्तरों व रुपों में व्यक्त किया है|

संस्कृत इसका मतलब संस्कारित भाषा, इस भाषा को देवभाषा कहॉ गया है| संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषा है| संस्कृत सिर्फ एक भाषा नही, अपितु भारतीय संस्कृति का प्राणवायु है| जिस प्रकार देवता अमर है उसी प्रकार संस्कृत भाषा भी आपणे विशाल साहित्य, लोकहित की भावना, विभिन्न प्रयासों तथा उपसर्गों के द्वारा नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता आदि के द्वारा अमर है|

पाणिनि ने संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा है| कुछ विद्वान प्राचीन वैदिक भाषा को पाणिनीय संस्कृत(लौकिक भाषा) से भिन्न मानते है, परंतु यह भ्रमपूर्ण है| वैदिक भाषा अभ्रान्त रूप से संस्कृत भाषा का आद्य उपलब्ध रूप है|

"संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभि|"

वाक्य में जिसे देवभाषा या "संस्कृत" भाषा कहा है, वह संभवत: यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि के समय तक वैदिक भाषा एवं लोकभाषा के दो नामों, स्तरों व रुपों में व्यक्त किया है|

संस्कृत भाषा के दो रूप है| -वैदिक और लौकिक

१. **वैदिक-** संस्कृत का वैदिक रूप संस्कृत भाषा की प्राचीनतम आकृति को धारण करता है| समस्त वैदिक वाङमय इसी रुप में विराजमान है|
२. **लौकिक रूप-** रामायण से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य तक सभी साहित्य इसमें निहित है| यह रुप पाणिनि मुनि के द्वारा नियंत्रित है|

संस्कृत वाङमय और आयुर्वेद ये बताते हुए, देवता से शूरुवात करना आवश्यक है वेदों में प्रत्येक सूक्त कि कोई देवता है, अग्नि, जल, इन्द्र इस देवताओं के साथ आश्विनौ भी देवता है, जो देवों के वैद्य माने जाते है|

आयुर्वेद चिकित्सा के आठ अंगो से शल्यचिकित्सा और कायचिकित्सा में पारंगत यह अश्विनकुमार है| ये देवताओं के चिकित्सक होने से सूक्तों के देवता माने जाते है| चिकित्सा विज्ञान की परंपरा भारत में ऋग्वेद के काल सें ही चली आ रही है|

१. ऋग्वेद में आयुर्वेद- ऋग्वेद यह सबसे पहला वेद है, इसमें ओषधी वनस्पति का उल्लेख मिलता है, ईसी के साथ मानव जीवन के दीर्घायु के लिए लता-वन वनस्पति वृक्ष नदी का भी महत्त्व प्रतिपादित किया है| ऋग्वेद के २३ मंत्रो में औषधीयों का महत्त्व प्रतिपादित किया है| तथा वानस्पतियों से होनेवाले विविध गुणों की महत्त्वपूर्ण बातें कही गयी है|

"चरित्रं वारिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्यायाम|
सद्योजधामायसी विषपलायै धनहिते षर्तवे प्रत्यधत्तम|"ऋ.१/१७६/१५

अर्थात खेल राजा की पत्नी विश्पला की टांग टुटी हुई थी, वो एक रात में लोहे की टांग आश्विनकुमारों ने लगा दी| ऋग्वेद में च्यवनऋषी को पुन: युवा बनाने का उल्लेख है| ऋग्वेद में कायचिकित्सा, प्रसूतिचिकित्सा, सूर्य किरणों द्वारा चिकित्सा वायु चिकित्सा, मानस चिकित्सा, आदि चिकित्साओं का वर्णन मिलता है|

"यकृन: हृदयसमीपे वर्तमान: कला मांसविशेष: तस्मात् यकृत|"

इस प्रकार यकृत अवयव का वर्णन ऋग्वेद भाष्य में है| प्लीहा, आंत्र, गुद, ये शरीर अवयवों का उल्लेख ऋग्वेद में आया है| (ऋ.१०/१६३/४-५)

वातपित्तकफ ये त्रिदोष का उल्लेख त्रिधातु नाम से ऋग्वेद में है| "त्रिधातुशर्मवहृतं शुभस्पति|" (ऋ.१/३४/६) अथवा

"इन्द्र त्रिधातु शरणं|" |"(ऋ.४ /७ /२८)इस मंत्र से ये सूचित किया है की, त्रिदोष या त्रिधातु ये हि शरीर के सभी कार्य करते है|

अग्नि का वर्णन भी ऋग्वेद में है| अग्नि के कारण ही शरीर की पुष्टी और कांती प्राप्त होती है|

मंत्रचिकित्सा और औषधीचिकित्सा के साथ साथ सूर्यचिकित्सा, जलचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, व वायुचिकित्सा इनका उल्लेख है|

सुरज की किरणों से कृमि नष्ट हो जाते है|, गर्भ में उत्पन्न होनेवाले जंतु को ऋग्वेद में "रक्षस्" ये शब्द आया है| और भी कृमी और उनका इलाज इस बारे में वर्णन ऋग्वेद में आया है|

ऋग्वेद में वर्णन कि हुई वनस्पति- अक्ष, अतसी, अश्वत्थ, अलर्क, उत्तनपर्ण, उलप, काकम्बीर, किंशुक, खदिर, दूर्वा, पाठा, पुष्कर, बिल्व, बिभितक, वंश, शाल्मली, शिग्रू, सोमवती इत्यादि

ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा है, भिषक् अथवा वैद्य को सभी औषधी वानस्पति का ज्ञान होता है और उनका उपयोग करके राक्षस (जंतु का)

नाश करके रोग को नष्ट करता है| इस तरह से वैद्य रक्क्षोहा और अमीवचातन (रोगनिवारक) होता है|

२. यजुर्वेद में आयुर्वेद- यजुर्वेद "यजुस् " ये शब्द से बना है| यजुर्वेद की बहोत सी ऋचाए ऋग्वेद सें ली है, लेकिन यज्ञकर्म में उनका उपयोग कैसा करना है, ये स्पष्टीकरण यजुर्वेद में दिया है| यजुर्वेद की, शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद ऐसी दो प्रमुख शाखाए है| शुक्ल यजुर्वेद में औषधी वनस्पति और उनका व्याधी दूर करने में उपयोग वर्णन किया है| औषधी वनस्पति के लिये अनेक मंत्र मिळते है जिससे स्पष्ट है औषधीयों का उपयोग यज्ञकर्म और स्वास्थ्य के लिये विशेष होता था| मानवी शरीर के अवयव का वर्णन भी किया है| यजुर्वेद का यह भी उपदेश है कि औषधीयों को केवल नाम या रूप से जानने का कोई महत्त्व नही है परंतु इनका उपयोग गुण दोषों के अनुसार जो जाणता है वही सच्चा चिकित्सक है| यजुर्वेद में दिव्य वैद्य का लक्षण बताया है कि जो रोगी को जड से उखाड देता है राक्षसों (जिवाणूओं) को मार सकता है वही दिव्य भिषक है| (यजु.१६/५)

३. अथर्ववेद में आयुर्वेद- अथर्ववेद में आयुर्वेदशास्त्र का वर्णन ऋग्वेद की अपेक्षा विस्तार से है, इसलिये आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद कहा है| अथर्ववेद में कुल २० कांड है उसमें आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये विषय समाविष्ट है| अथर्ववेद में वास्तुशास्त्र, आयुर्वेद, राजनीति इस विषय का विस्तार से वर्णन है |

अथर्व का अर्थ है भेषज /औषध . ये$थर्वाणस्तद् भेषजम् ||१-३/४
भेषज का एक पर्याय प्रतिषेध ये शब्द है| प्रतिषेध का अर्थ है रोकना, बढे हुए रोग को रोकता है इसलिये भेषज को प्रतिषेध कहा है|

त्रिदोष विचार- "यो अभ्रजा वातजा यश्च सुष्मो वनस्पतीन् |"
इस श्लोक से, अथर्ववेद में त्रिदोष कल्पना स्पष्टरुप से वर्णित है| सायनाचार्य ने कफ को अभ्र, पित्त को शुष्म, और वातजा मतलब वायु इस प्रकार अर्थ दिया है| त्रिदोष के साथ वनस्पति और उनका दोषघ्नत्व ये अथर्वकाल में ज्ञात थे| सोम, सूर्य, वायू इनके कफ पित्त और वातदोष ये शरीर के प्रतिनिधी है ऐसा उल्लेख ८/१/५ इस सूत्र मे आता है|

बाह्यसृष्टीमे क्लेदन श्लेषण करनेवाली सोमशक्ति, पचन परिवर्तन करनेवाली सौरशक्ती और प्राणशक्तीरूप वायु इनके शारीर अंश ही अनुक्रमे कफ, पित्त और वातदोष है| इन त्रिदोष के शरीर क्रिया वर्णन अथर्व वेद में मिलता है|

वाजीकरण विधि का वर्णन करते हुए निर्बीजीकरण प्रक्रिया का भी उल्लेख उल्लेख मिलता है|

वृक्क में मुत्रोत्पत्ति, मूत्र वाहिनी, गविनी, बस्ति इन सबका वर्णन वेद में मिलता है|

अग्निर्भूम्यामोषधीश्वाग्निमापो बिभत्यग्निरश्मसु |
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्णयः ||अथर्व.१२/१/१६
शरीर में होनेवाले पचन, परिवर्तन, ऊर्जा, देहोष्मा, प्रभा, कांती, संवेदना व ज्ञान ये सभी कार्य अग्नी की वजह से ही होते है| पित्त के आश्रय से अग्नि का कार्य चलता है, ये अग्नि एक अचिंत्य शक्ति है, ऐसा सायणाचार्य कहते है|

शरीररचना- व्याधी कहा होते है इनके अधिष्ठान आक्षि नासिका, कर्ण, शीर्षन्, मस्तिष्क, जिव्हा, ग्रीवा, अंस, बाहु, हृदय, क्लोम, प्लीहा, आंत्र, गुद, उदर, कुक्षि, नाभि, पार्ष्णि,अस्थि, मज्जा, धमनी, नख, लोम, पर्व, त्वचा इन अवयवों का उल्लेख आता है|(अथर्व .२/३३/१)

रोग- रोग के दो प्रकार बताए है १. आहार से उत्पन्न २. वरुण इ. शाप की वजह से होनेवाले|

निज व्याधी को रोग और आगंतु व्याधी को आस्त्राव, ये पर्याय है|

कास, हृदरोग, हरिमा(कामला), किलास, कुष्ठ, बलास (कफ, आम), पर्वभेद, गंडमाला, अपचि, विद्रधि, मुत्राघात, उन्माद, राजयक्ष्मा, अश्मरी, अर्बुद, छर्दि, मद, क्लैब्य इन व्याधीओ का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है| विशेषत: तक्मन(ज्वर) का विस्तार से है|

कृमि का विस्तृत वर्णन अथर्ववेद में है| छोटे बच्चो में जो कृमि के रोग होते है, ऊनके नाश के लिये अनेक मंत्र अथर्व वेद में दिये है| दोष प्रकोप, कृमि, और देवताओं का कोप इस कारण व्याधी होते है, ऐसा उल्लेख मिलता है| उदा .वरुणदेवता का कोप होणे से जलोंदर व्याधी होता है|

वेदकाल में युक्तिव्यपाश्रय और देवव्यपाश्रय दो प्रकार चिकित्सा के थे| व्याधी की चिकित्सा के लिए औषधीचकित्सा और मंत्र इनका उपयोग होता था|

अथर्ववेद में ४ प्रकार की चिकित्सा वर्णन की है|
१. आथर्वण - जप,मंत्र,तंत्र इत्या.
२. आंगिरसी - मानसिक शक्ति से की जानेवाली
३. दैवी - जल,वायु,पृथ्वी इनकी सहायता से की जानेवाली
४. मानुषी - औषधी से की जानेवाली|

अथर्ववेद में वनस्पतीयो:- इसमें कुछ वनस्पतियों का नाम उल्लेखित है जैसे -पिप्पली, आपामार्ग, मांसरोहीणी आदि आपामार्ग का विशेष वर्णन है |शिरोविरेचन द्रव्यो में आपामार्ग श्रेष्ठ बताया है, पुत्रोत्पत्ति के लिए भी आपामार्ग का उपयोग आयुर्वेद ग्रंथॉ में मिलता है| रोगो में किलास, कुष्ठ, रोग नाशक उपाय केश बढाने का उपाय हृदय रोग, कामला, अश्मरी, मूढ गर्भ आदि रोगो की चिकित्सा का वर्णन है|

४. रामायणकाल में आयुर्वेद- रामायण संस्कृत का आदि काव्य कहा जाता है| आयुर्वेद द्वारा ही सुशेन वैद्य ने मुर्छा युक्त लक्ष्मण की चिकित्सा की थी क्योंकि रामायण महाकाव्य में उपनिषद, दर्शन, स्मृति, ज्योतिष, धनुर्वेद, आयुर्वेद एवं उससे संबंध उपयोगी विषय उपस्थित है| जैसा की रामायण में विहित है -
अनिर्वेद: श्रियो मूलमनिर्वेद: परं सुखम् |
अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेषु प्रवर्तक: ||सुंदर काण्ड सर्ग -१२
रामायणमें तैल भोगी तथा वनस्पतियों का वर्णन आया है |भारतीय प्रथा में वस्तूओं को सुरक्षित रखने का उपाय तैल और मधु है |राजा दशरथ का शव भी भरत के आणे तक तैल में सुरक्षित रखा था|

वनस्पति में कुटज, अर्जुन, सर्ज, नीम, अशोक, सप्तछन्द, असन, कोविदार आदि वृक्ष का उल्लेख रामायण मे है रावण की मधुशाला का वर्णन इस तरह किया है-ये पानभूमी प्रदीप्त थी, वहॉ अच्छी बनाई हुई घृत, सुरा, शर्करासव, पुष्पासव, फलासव उपलब्ध थे|

पानभूमी या मधुशाला का वर्णन अष्टांग संग्रह चिकित्सा स्थान अ.९ में वर्णीत है|

५. महाभारत कालीन आयुर्वेद- महाभारत में वैद्यक संबंधी उल्लेख आता है -

१. अश्विनकुमार का उल्लेख चिकित्सा के संदर्भ में आदिपर्व ३/५६ में है|
२. महाभारत का नारद युधिष्ठिर संवाद, नारद पुछता है," हे युधिष्ठिर, तु शरीर रोगों की चिकित्सा, औषधी, और पथ्य सेवन कर रहा है ना !? मानसिक रोग की चिकित्सा(सत्वावजय), वृद्धओ की सेवा और सत्संग से कर रहे हो ना! चरकाचार्य ने भी मानस रोग की चिकित्सा धर्म ,अर्थ ,काम इनका पालन यही बताई है|
३. स्थावर और जांगम विष परस्पर मारक होते है ,इसलिये भगवान शंकर ने हलाहल प्राशन के बाद सर्पविष निकालणे के लिए सर्प गले में बांधा था|
४. सुश्रुत कल्प ३/६ में उल्लेख है की युद्ध समय शत्रु जल, वायु, आसनभूमी विषयुक्त करते थे, उनका चिकित्सा प्रतिकार करने के लिए उत्तम वैदयों की जरूरत होती थी| महाभारत में दोनो सैन्य में निष्णात वैद्य थे|
५. युद्ध के समय वैदयों का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण था| महाभारत काल में वैदयो के गृह पर श्वेतध्वज रहता था और उनका घर राजा के घर के पास होता था|

६. उपनिषदांतील आयुर्वेद- उपनिषदे वाङमय वेद के उत्तरकाल में निर्मित हुए|

अन्नमशितं त्रेधा विधीयते तस्य य: स्थविष्ठो धातु: तत् पुरीषं भवति ||छान्दोग्य ५

अन्नपचन के बाद उसके स्थूल, सूक्ष्म, और मल ऐसे ३ हिस्से बनते है, वह तत् भावों का पोषण करते है| चरकसंहिता मे भी यही वर्णन आता है |

शतं चैका हृदयस्य नाड्या .. भवंतीत्यर्थ:||

इस सूत्र से, हृदय की सौ और एक मिलाके एकसो एक नाडीयॉ है| एक मुख्य नाडी (सुषुम्ना)अधोभाग से ऊर्ध्व भाग की ओर जाती है| ये १०१ नाडीयॉ मांसपिंड से हृदय तक निबद्ध होती है| उपनिषद में ये उल्लेख आया है|

७. स्मृति और पुराणों मे आयुर्वेद- औषधी वनस्पति का वर्णन करते हुए वनस्पति, वानस्पत्य औषधी, और वृक्ष इस प्रकार वर्णन मनुस्मृती में दिया है|

स्वास्थ्य रक्षण के लिए दिनचर्या, ऋतुचर्या पालन करना चाहिए, आहार के नियम भी बताए है, विष्णुस्मृति में वर्णन किया है| इसी तरह अष्टांग संग्रह में भी नियम बताए है|

CONCLUSION

संक्षेप में कहा जा सकता है कि वैदिक काल से संस्कृत वाङमय में मानव जीवन से संबधित स्वास्थ्य के हर पहलु का वर्णन मिलता है|

REFERENCES

1. Mishra Y C, Padarth Vigyana. Edition: Reprint, 2015 Varanasi; Chaukhambha Sanskrit Sansthan; 2015.
2. Murthy K R Srikantha, Illustrated Susruta Samhita. Reprint edition 2023 . Varanasi; Chaukhambha Orientalia; 2023.
3. Sastri K. Chaturvedi NG, Charak Samhita with elaborated Vidhyotini Hindi commentary Part 1.2021.Varanasi. Chaukhambha Orientalia; 2021.
4. Mishra YC. Padarth Vigyana. edition: Reprint, 2015. Varanasi. Chaukhambha Sanskrit Sansthan; 2015
5. Agnivesa. Charaka Samhita, Ed. Reprint 2016, Chaukhambha Sanskrit Sansthan,Varanasi, pp64.
6. padarth Vigyan & ayurved itihas by Dr.subhash Ranade